

वह वैहद के बाप का मंत्र है। परन्तु आते हैं मंत्र देते हैं यहकिसको भी पता नहीं। गुलौग मंत्र देते हैं कहेंगे सुनाने की मना है। यह गुरु की रसम भी कहां से निकली। हरेक रसम यहां ही है। यह बाप शिष्यक गुरु है। यहां भी वसीकरण मंत्र देते हैं। माया पर जीत पाने लिख मंत्र है। मनमनाभव। मंत्र अका अर्थ समझना चाहिए ना। वह लोग मंत्र देते हैं अर्थ कुछ भी नहीं। बाप आकर वसीकरण मंत्र देते हैं जिससे हम 5 विकारों पर जीत पा लेते हैं और वारण पर जीत, अथवा माया पर जीत पा लेते हैं। जौ गौया जगतजीत बने। यह कहते हैं मामें याद करो। आवे बाप तब तो मंत्र दे ना। यह बाप भी है टीचर भी है, सदगुर भी है। यह एक ही है। प्रदर्शनी में भी समझाते हैं हमारा बाप टीचर गुरु वही रुक है। बाप से बरसा मिलना चाहिए। सो वैहद के सुख का बरसा मिलता है। टीचर 84 का चक्र समझाते हैं। गुरु है ये ग सिखलाते हैं। बाप को याद करो तो बेरा पार है। विषय सागर से क्षीर सागरमें, कलियुग से सतयुग या मृत्युतीक से अमरतीक में। वच्चों की यह पता नहीं है यह पुस्तक संगम युग है। पुरानी दुनिया का अन्त नई दुनिया के आदि इसको कहा जाता है। पुस्तक संगम युग। मंत्र लेना सेकण्ड का काम है। देरी नहीं लगती। बाप पिर सेकण्ड में जीवन मुक्ति का बरसा देते हैं। इसलिए सभी को दो बाप का सुनाओ। पारलौकिक बाप से स्वर्ग का बरसा मिलता है। भैश्वर्णश्वरात्रि हुई थी। जरूर भारत को स्वर्ग बनाकर गया। भारत स्वर्ग था अभी नक्क है। पिर स्वर्ग बनाने जरूर बाप ही आवेंगे। बाप स्वर्ग का बरसा दे रहे हैं। बाप वच्चों को याद दिलाते हैं। कल्प पहले भी आये थे। शिव को तो जानते हो ना। भारत था तो और कोई धर्म न था। अभी बहुत धर्म है। नक्क है। तो पिर से एक धर्म की स्थापना होनी है। पवित्र जरूर बनना है। इस झामा के राज् को मनुष्य जानते ही नहीं। इम्फाल में टाईम इतनाही लगता है जितनां४ कल्प 2 लगता है। बाप को फिल नहीं है। इम्फाल होनी हो है। वच्चे पुस्तक भी जरूर कहेंगे। नहीं तो पद कम पावेंगे। वैहद का बाप जरूर वैहद का बरसा देंगे। प्रजापिता भी जरूर चाहिए। ब्रह्मा का बाप शिव। तुम ब्रह्मा के वच्चे हो ना। वच्चे और वच्चयां। तो परिवार हुआ ना। बाप था, ब्रह्मा था, और ब्रह्माकुमारियां भी थीं। वैहद के बाप से ब्रह्माकुमार कुमीरयां को स्वर्ग का बरसा मिलता है। यह तो पक्का है। 15000 वर्ष की बात है। लाखों वर्ष कह देने से मुंझ पड़े हैं। इसको कहा जाता है अज्ञान। सभी कुम्भकरण के नींद में सोये पड़े हैं। आसुरी सम्रूद्धाय है जरूर। रावण का राज्य बरोबर है। परन्तु किसकी बुध में नहीं बैठता। रावण दुर्मन की मारते हैं। परन्तु मरतानहीं है। रामराज्य सतयुग त्रेता को, रावण राज्य दवापर क्रांस्मु कलियुग को कहा जाता है। रामराज्य में सुख, रावण राज्य में है दुःख। तुम जानते हो बरोबर हम बन्दर भिसल थे। उनको ही बाप माँदर लायक बनाकर रावण राज्य पर जीत पहनाते हैं। इस समय सारी दुनिया पर रावण राज्य है। सारी दुनिया बेट है। भैश्वर्णश्वरात्रि समुद्र पर खड़ा है। सारी दुनिया में रावण राज्य है तो मनुष्य बहुत हैं। रामराज्य हीगा तो मनुष्य थोड़े हींगे। तो अच्छी रीत समझना है। स्वर्दर्शनचक्रधारी भी तुम ब्राह्मण ही हो। यह ज्ञान तुम्हारे में है। परन्तु यह अलंकार तुमको दे न सके। विष्णु है भाईनल। इसलिए उनको अलंकार दिये हैं। बाकी उनमें यह ज्ञान है नहीं। ज्ञान सिंक ब्राह्मणों में ही है। न देवताओं में न शुद्धों में। इसलिए तुम ब्राह्मण कुल की देवताओं से भी उच्चकहा गया है। ब्राह्मणों के ऊपर है शिव वावा। गते भी हैं बहुत गई थोड़ी रही है... पुरानी दुनिया बाकीथोड़ा समय है। अभी नई दुनिया में जानें के लिए यात्रा पर भोर खो। दैवी गुण भी चाहिए। वच्चे समझते हैं कल्प 2 हम अपने तन मन धन से भारत को स्वर्ग बनाते हैं। रावण राज्य कर्म अकर्म होता है। रावण राज्य में कर्म विकर्म होता है। यह भी बाप ही समझते हैं। कोई शास्त्र नहीं है नहीं। तुम वच्चे जानते हो बाप से हम सुख शान्ति का बरसा ले रहे हैं। तुम्हारी यात्रा है चढ़ती कत्ता की। बह है उत स्ती कला की। तुम ब्राह्मण हो प्रजापिता ब्रह्मा के वच्चे। शिव वावाके पौत्र। ब्राह्मण भिक्षा मांगते हैं। तुमको कहते हैं। भ्रंगे मांगने से मरना भला। सङ्ग मिले सो दृध बरोबर मांग लिया सो पानी, चैंच लिया सो स्त बरोबर, यह पिर है बाप दादा की... ॥

वह दूध नहीं पानी हो जाता है। मांगने वाले पर दोष² लग जाता है। वेहद के बाप बच्चों को मांगने को दखल नहीं। भक्ति मार्ग में दान करते थे मैर अर्थ। तो अत्प काल कासुख एक जन्म के लिए मिल जाता था। अभी मैं डायेक्ट हूँ। तुम्हारा वह फिर 21 जन्मों का बन जाता है। बाको दान करना है भदद करनी है न करनी है वह तुम्हारे पर है। करेंगे तो पावेंगे। बाप कच्चों को कहते हैं कब मांगना नहीं। नहीं तो अज्ञा का दण्ड पड़े जावेंगा। सुदृगुरु का निन्दक ठैर न पावै। यानि पद नहीं। क्यों सदगुरु के पंतर्गंदाते हैं। शिव दावा के बच्चे फिर मांगना। कब नहीं मांगना चाहिए। निन्दा कराकर तुम अपना मर्तवा कम करते अस्त्रिय हो। इसलिए कब भी मांगनान चाहिए। बाप कायदे तो सभी समझा देते हैं। फिर हर एक बच्चे को बुधि अपनी है। हस्पीट वनाते हैं उनका फ्ल मिलता है दूसरे जन्म में। फिर इतना विषय नहीं पड़ेगे। धर्मशाला वनावेंगे नो खश्वर्ख मकान अच्छा मिलेगा। एक जन्म के लिए। यह फिर बाप कहते हैं नई दुनिया में। 21 जन्म लिए मिलनाहै। अच्छा। बच्चों को समझाते तो बहुत हैं। बाप 100% समझदार बनाते हैं। रावण 100% बैसमूल बनाये देते हैं। सभी कहते हैं कैस्टर्स छाराव है। विकार है ना। रामराज्य में कैस्टर्स देवी बनाते हैं। प्युरिटी नहीं तो पी प्रास्पर्टी भी नहीं। निर्विकारी दुनिया सालवेन्ट, विकारी दुनिया है इनसालवेन्ट। सारा मदार है पवित्रता पर। अभी पवित्रता नहीं तो पीस प्रास्पर्टी भी नहीं। इगड़ा अर्याचार आद सभी होते रहते हैं। विकार के कारण शुरू से लेकर छागड़े आद पड़ते आ रहे हैं। अर्याचार होते रहते हैं। अन्त तक चलते रहेंगे। अच्छा बच्चे= रहानी बच्चों को रहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडनाईट। रहानी बच्चों को रहानी बाप झड़ का नमस्ते।

रात्रि समा

29-7-68

ओमशान्ति

मन्मनाभव, मैमैष मामें याद करो।

इस सुस्ट चक्र में त्वेक्ष्म तीन मत होती है। एक मानव मत। इसके बाद श्रीमत, जिसको ईश्वरीय मत कहा जाता है। ईश्वरीयमत से फिर देवी मत होती है। ईश्वर मनुष्य मत से चेंज कर ईश्वरीयमत से देवी मत बनाते सत्युग त्रैता में है देवी मत। बाप ने समझाया है सत्युग को स्वर्ग कहा जाता है। त्रैता को सेमी स्वर्ग। दौ कला कम है। फिर द्वापर और कलियुग आता है। फिर भक्ति शुरू होती है। ज्ञान का वरसा पूरा हुआ फिर रावण का वरसा। भक्ति मार्ग शुरू अर्थात् दुर्गीत शुरू। मनुष्य मत को कहा जाता है आसुरी मत। क्योंकि 5 विकार सर्वव्यापी हो जाते हैं। ईश्वर सर्वव्यापी कहना भूल है। 5 विकार सर्वव्यापी जरूर है। सभी मनुष्य मात्र में है। फिर होती है ईश्वरीय मत। देवता मत बनने लिए। बाप पतित-पावन है। उनकी है ईश्वरीय मत सब से ऊंच ते ऊंचमत। इसको श्रीमत कहा जाता है। श्रीमत से तुम श्रेष्ठ बनते हो। बाप ने समझाया है जबकलियुग होता है रावण राज्य शुरू होता है। भारत की ही वात है। भारत ही ऊंच भारत ही नीच बनती है। 84 जन्म भी भारत ही लेती है। मैक्सीमम है 84 जन्म, मिनीमम है एक जन्म। 84 लाख जन्म नहीं हैं। बाप बैठसमझाते हैं तुम पुरुषेतम संगम युग पर खड़े हो। इसतरफ है कलियुग-उस तरफ है सत्युग। कलियुग मैवहुत मनुष्य है। सत्युग में थोड़े देवी-देवताएं होते हैं। इस तरफ अथाह अनेकानेक धर्म है। त्रिमूर्ति चित्र भी दिखाते हैं। ब्रह्मा इवारा स्थापना। प्रजापिता ब्रह्मा है ना। तुम ब्राह्मण कुद्वंशावली नहीं हो। तुम हो मुख दंशावली। पहले 2 बाप फिर तुम ब्राह्मण। तुम ब्राह्मण ही देवता बनते हो। यह भी बच्चों को समझाया है। राम को तीर क्यों देते हैं। इस समय हो रहानी क्षत्री। बाप कहते हैं मैं गुप्त आता हूँ। देखने मैं नहीं आता हूँ। अहमा भी गुप्त है परन्तु समूल सब आत्माएँ मैं है। अर्द्धे वृते संस्कार अहमा हैं मैं है। पतित भी अहमा बनती है। आत्मा पतित तो शरीर भी पतित। अहमा पावन है तो शरीरमी पावन। अहमा मैं खाद है तो जेवर भी खाद का बनता है। यह बाप ही जानते हैं। जो झड़ बताते हैं। क्षमित्रुन सभी कहते हैं थे हम स्वयिता और स्वना को नहीं जानते हैं। यह ल०ना० भी नहीं जानते। तो परमपरा चल न सके। यह अहमा ही बनती है सभी कुछ आत्माही बनती है। आत्मा एक शरीर —

छोड़ दूसरा लेती है। हिसाब भी वाप समझते हैं। आत्मारं परमस्त्मा अलग रहे वहुकाल ... नालेज तो बहुत ही सहज है। वाप को जान लिया और वरसे को जान लिया। पिर 21 जन्म वैहद का वरसा पाते हैं। इस कल्प बृक्ष को भी तुम बच्चों ने समझ लिया है। यह उल्टा धौर है। वाप कहते हैं मैं हूँ बृक्षपति। भारत पर बृहस्पति की दशा वैठती है। जब कि वाप आये हैं। राहू को दशा धी। सभी पर राहू का ग्रहण पाए। वाप अभी कहते हैं दे दान तो छूटे ग्रहण। विकार छोड़ दो। विकरी बन्धन भी छोड़नाहै। वाप इस बन्ध में छुड़ाये देवी सम्बन्ध में जोड़ते हैं। सतयुग में तुम्हारा है देवी सम्बन्ध। यह नालेज वाप ही बच्चों ने देते हैं। वाप को कहा जाता है गरीब निवाज। अभी गरीब मैं गरीब तुम हो। साहुकार मनुष्य अपन को स्वर्ग में समझते हैं। तो गरीब साहुकार बनेंगे। साहुकार पिछाड़े में आवेंगे तो गरीब बन जावेंगे। यह खेल ही ऐसा बना हुआ है। यह पाठ-शाला है। जिसमें तुम पढ़ते हो। एमआवजेक्ट सामने है। पदार्ड मैं एमआवजेक्ट रहती है। वैद-शास्त्र आद पदार्ड मैं एमआवजेक्ट नहीं। पदार्ड सौर्सआफ इनकम होती है। गाया जाता है स्टुडन्ट लाईफ इज दी वैस्ट लाईफ। वह यह है। अभी तुम पदमापदमभाष्यशाली बनते हो। 21 जन्मों के लिए। कल स्वर्ग था आज नक्क है। पिर स्वर्ग होगा। देरी नहीं लगती है। कल तुम स्वर्ग में थे आज नक्क मैं हो। कल पिर स्वर्ग में होंगे। शास्त्रों प्रेरणा तो बहुत हो गये। डाल किए दिये हैं। इमाम अनुसार नई बात नहीं। वाप कहते हैं जो ज्ञान देता हूँ वह प्रायः लोप हो जाता है। भगवानुवाच तुम हो सच्चाई मैं पतित हो। यह है यथात्। भक्ति मार्ग है अच्छ अयर्थात्। गपौँड़े हैं भक्ति मार्ग मैं। इसमें भेनत कुछ भी नहीं। चुप। आवाज से भी परे। वाप कहते हैं मामों से याद करो। वस। तुम कहते हो मैं गुलाम ... वाप कहते हैं मैं गुलाम मैं गुलाम मैं गुलाम तैरा। वाप सर्वेन्ट होता है ना। बच्चों को देकर खुद वानप्रस्त में चले जाते हैं। भक्ति मार्ग के गुरु दैर है। ज्ञान मार्ग मैं गुस्सा। वाप भी है। वाप अक्षर भीठा है। उनका वरसा भी भीठा है। तो वाप तरफ लव बहुत जाता है। आत्मा परमस्त्मा अर्थात् वाप और बच्चों को मैता लगता है। इसको संगम यंग का मैला कहा जाता है। सबसे प्यारी वस्तु है वाप। जो तुम बच्चों को विश्व का मालिक बनाते हैं। मनुष्य थोड़े ही जानते हैं कि राजयोग किसको कहा जाता है। सन्यासी सिखता न सके। वह तो नसी को ही नागिन कहते हैं। बाग कहते हैं नसी स्वर्ण का द्वार खोलती है। तुम बच्चों को अमृत मिलता है पवित्रदेवता बनने के लिए। याद की यात्रा मैं ही समय लगता है। क्योंकि माया के विष पड़ते गहरे हैं। ही भी बहुत सहज ते सहज। पिर भी कहते हैं वावा भूल जाते हैं। लौकिक वाप बठर मैं डालते हैं उनको नहीं भूलते हो। स्वर्ग मैं ले जाने वाले वाप को भूल जाते हो। वाप कहते हैं इन विकारों से सम्भालना है। इन्होंने ही तुमके अछूत बनाया है। यह है ही पतित छी छी दुनिया। बिछ जहर है। काम कटांसी आंद मध्य अंत दुःख देते हैं। इसलिए कहा जाता है काम जीत ब्रह्मजीक्षा जगतजीत। वाप गुप्त। नालेज भी गुप्त। सभी कुछ गुप्त है। पिर भी वाप कहते हैं अलफ को याद करो तो वे वादशाही तुम्हारी। और कोई तकलीफ की बात नहीं। अच्छा भीठे 2 रुपानी बच्चों को रुपानी वाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। नमस्ते।

रात्रि समा 30-7-68 :- स्थापना हो रही है। गाया हुआ है ब्रह्मा द्वारा स्थापना हो रही है। आगे भक्ति मार्ग मैं कहते थे ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश, विष्णु द्वारा पालना। समझते कुछ नहीं थे। अभी तुम समझते हो जरूर स्थापना होगी। टाईमइसमें थोड़ा लगेगा। होनी जरूर है इसलिए वच्चे पुस्तार्थ कर रहे हैं। विष भी जरूर पड़ते हैं। वही अखबार वहुत कालम ऐ अच्छा लिख डालते हैं। वही अखबार पिरकब 2 उल्टा डाल देते हैं। उनको लिख भेज देवें। तुम पहले साथ अभी ग्लानी क्यों करते हो। स्फीट्वे = रहीट र कहेंगे हमको जो देते हैं सो डालते हैं। सरी पैसे की बात है। विष पड़ते हैं। तुम बच्चे कोशिश करते हों कोई का भाग्य उदय हो जाये। अखबार वाले ये विष स्थ से पड़ते हैं। यह भी इमाम। कल्प पहले भी हुआ था। इसलिए पिक्र की बात नहीं। स्थापना होनी ही है। लड़वाई का मेदान है। विष जरूर पड़ते हैं। अखबार उल्टा लिखते हैं तो क्याएँ मानाएँ ... मरती हैं। आज अच्छा पिर वुरा कह देते। वही पुरुष स्त्री को कहता भल जाओ। पिर अखबार पट्टी, कहेंगे नहीं ...

यह कल्प पहले मिसलीविध पड़ेगे। फिर की बात ही नहीं। लक्ष्म पदार्थ में होता है ना। नीचे-ऊपर होते 2 आखरीन शांतिधाम चले जावेगे। तुम्हारे रैम है शांतिधाम जाने की फिर नई दुनिया में आवेगे। तुम्हारे अभी है चढ़ती कला। फिर भी सीढ़ी तो उतरनी ही है। तुम बच्चे जैसे जीन हो। बाप ने उतरने चढ़ने का काम दिया है। यह है खौल। खेल को बन्द नहीं कर सकता। अनादी यह चलता ही रहता है। उतराई और ददार्हि। यह भी तुम जानते हो। दुनिया में कोई नहीं जानते। जितना यज्ञ की सर्वेस कर्मेदेवी गुण धारण करेंगे उतना ही ऊँच पद पारेगे। इन्हें ऊपर ध्यान खाना है। तुम व्यापारी हो। बाप भी व्यापारी है। कोई विरला व्यापारी व्यापार करे और इनकी श्रीमत परर पर चलो। रेजष्ट्रेशन मेल खो। कितना याद किया कितना देवी गुण धारण किया। यह पौत्रामेल खोनी है। तुम बच्चे बाप से भी अच्छा पुस्तार्ड बन्द करते हो। तुम साता खते हो। दादा नहीं खते हो। परन्तु इनकी पक्की खातरी है। बाप दादा दोनों ही बड़े इकट्ठे हैं। बाप दादा सुनते ही रहते। तो यह पौत्रामेल ख क्या करेगे। इनको तो सर्टन है ही। सूक्ष्मवत्तन में भी देख आते हैं। अपना पौत्रामेल खाना अच्छा है। फायदा देख खुश होंगे। इतनी जब मैंन हनत करो तब खुशी का पास चढ़े। अपना रजिस्टर देखो। यूँ तो होके अपना पौत्रामेल देख सकते हैं। कहाँ क्रिमनल आई घैस्ता तो नहीं देती हैं। वे ह में तो नहीं फँसते हैं। पुस्तार्ड बर छूटना है। देही अभिमानी बनना है। अभी तो बहुत टाईम पड़ा है। जितनादेरी से आवेगे उनको धोड़ा धाटा पड़ता जावेगा। परानौं की रेजपुस्तार्ड करते रहते हैं। बाकी जिनकी तकदीर में नहीं है उनसे पुस्तार्ड होता ही नहीं। बाप की याद नहीं कर सकते। क्योंकि तकदीर में नहीं है। बहुत बच्चियां कहती हैं। बाबा हम भूल जाते हैं। बाप क्या कर। सिखलाते तो जरूर हैं। मैं सीझो ना। बोलो। वेहद का बाप पतित-पावन है ना। उनको याद करो तो पावन बने पावन दुनिया में चले जावेगे। यह पैगाम देना है। वेहद के बाप से = स्वर्ण स्वर्ग का वरसा मिला था। भासत स्वर्ग बासी था। अभी नर्क बासी है। अभी तुम पुरुषोलम संगम युग पर हो। जब तक बाप ने जाये तब तक स्वर्ण मैं भी कोई नहीं जा सकते। सभी नम्बरवार पुस्तार्ड करते ही रहते हैं। कल्प पहले मिसल पुस्तार्ड कर रहे हैं। पुस्तार्ड विगर दौड़ि रह नहीं सकता। कुछ भी है पुस्तार्ड जरूर किया जाता है। हर बात में पुस्तार्ड करना होता है। सौने लिए भी पुस्तार्ड करना होता है। फिर सबैर उठकर बाप को याद करने का पुस्तार्ड करेंगे। पुस्तार्ड से प्रारंभ मिलती है। सब से लक्ष्मी जास्ती पुस्तार्ड करने वाला है ऊँच ते ऊँच भगवान। वह आकर तुम बच्चों से पुस्तार्ड करते हैं। भगवान के साथ हम रहते भी हैं। निराकारी दुनिया में आना जरूर है। भगवान पदार्थ हैं तो हमको भगवान भगवती कह लाना चाहिए। परन्तु फिर भगवान भगवती तो साक्षात् मैं चाहिए। साक्षात् मैं फिर भगवान भगवती कहना रांग हो जाता है। मनुष्य को भगवान कह नहीं सकते। भगवान पदार्थ हैं। साक्षात् तो नहीं है जो भगवान भगवती बनादे। मनुष्यों ने यह इस्त दे दी है। भगवान है एक निराकार। भगवती भगवान तो फिर शशीरधारी होंगे। इसीलिए फिर देवता कहा जाता है। भगवान रक बाप को कहा जाता। बाप आकर समझ देते हैं और पदार्थ है। खुद कहते हैं मैं तुमकी राजाओं का राजा बनाता हूँ। राजाओं का भी महाराजा। कहते भी हो हम महाराजा बनेंगे। बाप भी कहते हैं हाँ बच्चे पुस्तार्ड करो। तुम्हारी रमणावजेट ही यह है। खुद पुस्तार्ड बरो। समझते हो सारी डिनायरहीद्यहाँ संगम युग पर स्थान होनी है। बाप कहते हैं तुम बहुत थक गये हो। अभी चलो शांतिधाम। फिर ज्ञान रहेगा नहीं। सभी दुःखदूर हो जाते हैं। सारी दुनिया की सुख शांति का सहारा रक ही रहता है। मीठे 2 बच्चों को अतिर्दिन्द्रियसुख मैं खुशी रहनी चाहिए। कब 2 दिल मैं आता होगा सत्युग आवे तो हम जावें। परन्तु अभी बाप साथ है। जितना बाबा राख रहे अच्छा। कितना मैंन हतकर्ते हैं प्रजा बनाने मैं। कलियुगी बन्धन का नाता तोड़ना है। शुद्धों से तोड़ना ब्राह्मणों से जोड़ना है। कितनी छिट 2 होती है। वडी हिंस्त चाहिए। परिवार को राजी खने हिए भी युक्त से चलना चाहिए। समझो भक्त न कूरने से नूराज होते हैं तो अन्दर मींदर मैं जाकर शिव बाबा को याद करते रहो। उपर 2 कछु ल्लो। लिंग के लिए तुग करे तो बोली भगवान कहते हैं काम मूहशात्र है। . . . ग्रीया चीत्रवहत होती है। बाप ने चरित सिखाइ है। दूहद के बाप से वेहद का वरसा पाने हिए उनक प्रैकार की चतुराई सिखलाते हैं। अच्छा बच्चों के गुडनाइट आर नमस्त।